क्या कुत्तों को मालिक का हाल पता चल जाता है?

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

शोधकर्ता कुत्तों की जीवन रक्षक भूमिका से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने फैसला किया कि उन कुत्तों के नाम ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में छपने वाले शोध पत्र में लेखकों के रूप में शामिल किए जाएं। यह एक ऐसा बिरला शोधपत्र है जिसके लेखकों में इंसान के अलावा कोई अन्य जीव शामिल है।

मेरे इस लेख को पढ़कर कुछ लोग नाक-भौं सिकोड़ेंगे और इस पर तमाम किस्म की प्रतिक्रियाएं भी आएंगी। कुछ पाठक शायद बताएंगे कि कैसे उनके कुत्ते या पालतू घोड़े, बिल्ली, खरगोश वगैरह को मालिक के परिवार के सदस्यों की शारीरिक तकलीफों का पता चला जाता है और वे इसकी चेतावनी भी देते हैं। अन्य पाठक इस तरह का परा-विज्ञान फैलाने के लिए मुझे भून डालेंगे। परन्तु मेरा ख्याल है कि इस मामले को सामने लाना बहुत ज़रूरी है।

दरअसल इस लेख को लिखने की प्रेरणा मुझे ब्रिटिश मेडिकल जर्नल के 23 जून 2001 में छपे एक शोधपत्र से मिली। इस शोधपत्र में डॉ. विवियन एडवर्ड्स ने उन घटनाओं का ज़िक्र किया है जिनकी वजह से वे यह मानने को विवश हो गईं कि 'स्वस्थ करने की क्षमता मात्र इंसानों में नहीं होती।' डॉ. विवियन एडवर्ड्स इंग्लैण्ड में जच्चा-बच्चा स्वास्थ्य विभाग में चिकित्सा अधिकारी रह चुकी हैं।

उन्होंने लिखा है कि एक महिला ने उनसे संपर्क किया। हाल ही में उस महिला के पति की मृत्यु हुई थी। इस वजह से वह काफी कष्ट में थी। सारे प्रयासों के बावजूद डॉ. एडवर्ड्स दुख के उस आवरण को न भेद सकीं जो उस महिला ने अपने आसपास बुन लिया था। खतरा यह था कि कहीं वह महिला परेशान होकर अपनी जान न ले लें। इस मौके पर डॉ. एडवर्ड्स ने अपने पालतू बेल्जियन शेफर्ड कुत्ते किम की ओर देखा। किम चुपचाप यह सब देख रहा था। डॉक्टर ने उसकी ओर याचना भरी नज़र से देखा और किम ने फौरन प्रतिक्रिया व्यक्त की। वह उठकर तकलीफज़दा महिला के पास गया। अगले पैरों से उसकी कमर पकड़ ली और अपना सिर उसकी गोद में रखकर अपनी आंखें उस पर गड़ा दीं। धीरे-धीरे उस महिला ने अपना सिर उठाया। उनकी आंखें मिलीं और महिला की आंखों से आंसू बह निकले। उसने कुत्ते को छुआ और धीरे से मुस्करा दी। आखिरकार वह बोलने लगी - डॉक्टर और किम चुपचाप सुनते रहे। आने वाले महीनों में किम उस महिला के लिए सुकून और हौसले का स्रोत बना रहा। डॉ. एडवर्ड्स का कहना है कि उसके बाद से उन्होंने सीखा कि दुखी लोगों की मदद के लिए अपने कुत्ते का उपयोग कैसे करें।

डॉ. एडवर्ड्स के इस ब्यौरे से पहले ब्रिटिश मेडिकल जर्नल के क्रिस्मस 2000 के अंक में लिवरपूल विश्वविद्यालय अस्पताल के डॉ. गैरेथ विलियम्स और उनके साथियों द्वारा भेजा गया विवरण छप चुका था। अपने पर्चे में उन्होंने तीन ऐसे मामले बताए थे जब किसी पालतू कुत्ते ने अपने मालिक में आसन्न हायपोग्लायसेमिया (रक्त में ग्लूकोज़ की खतरनाक कमी) को भांपकर समय रहते इसकी चेतावनी भी दी थी। ऐसा लगता है कि कुत्ते स्वास्थ्य सम्बंधी खतरो की पूर्व

चेतावनी दे देते हैं।

पहला मामला एक 66 वर्षीय महिला का था, जिन्हें टाइप 2 मधुमेह (जिसमें इन्सुलिन की ज़रूरत पड़ती है) था। उन्हें बार-बार हायपोग्लायसेमिया के दौरे पड़ते थे। जब उन्हें यह दौरा पड़ता तो खूब पसीना निकलता, अत्यधिक कमज़ोरी आ जाती और वे चिड़चिड़ी हो जातीं। ये दौरे प्रायः शाम को आते हैं और वे फौरन इलाज़ कर लेती हैं। पिछले वर्ष उन्होंने देखा कि उनकी 9 वर्षीय मॉन्ग्रेल कुतिया कैण्डी काफी असामान्य व्यवहार करती है। कई बार कैण्डी उछलेगी, भागकर बाहर जाएगी और कुर्सी के नीचे छिप जाएगी। वह अपना यह विचित्र व्यवहार तभी बन्द करती है जब उसकी मालकिन कुछ कार्बोहायड्रेट खाकर थोड़ी ताकत प्राप्त कर ले। कैण्डी का यह विचित्र व्यवहार तब शुरू हो जाता है जब मरीज़ को अपने हायपोग्लायसेमिया का कोई भान तक नहीं होता।

दूसरा मामला भी इसी तरह का था। इसमें एक 7 वर्षीय मॉन्ग्रेल कुतिया सूज़ी द्वारा चेतावनी का वर्णन था। उसकी 47 वर्षीय मालकिन भी हायपोग्लायसेमिया के दौरों से पीड़ित थीं। वे गहरी नींद में होने के कारण इस बात को नहीं जान पातीं। सूज़ी उन्हें जगाकर मजबूर कर देती है कि वे कुछ खा लें। इसके बाद उनकी हालत सुधर जाती है। अन्य अवसरों पर सूज़ी मालकिन को घर से बाहर जाने से तब तक रोके रखती है जब तक कि वे अपने हायपोग्लासेमिया से बचने के लिए कुछ खा न लें। इन सारी घटनाओं में मरीज़ स्वयं इस बात से बेखबर थीं कि उनके खून में शक्कर की कमी हो रही है। उनके पति को भी इसका भान नहीं था, क्योंकि वे तो सो रहे होते थे।

और तीसरे मामले में चेतावनी की घण्टी बजाने का काम 3 वर्षीय गोल्डन रिट्रीवर कुत्ता नैट करता है। वह भी अपनी मालकिन के हायपोग्लासेमिया को पहले ही पहचानकर चेतावनी दे देता है। वह कमरे में चहलकदमी करने लगता है, रात को भौंकता है और बेडरूम के दरवाज़े को खरोंचता जाता है।

विज्ञान लेखक कुत्ते

इन तीन कुत्तों के उपरोक्त व्यवहार का विवरण देने वाले प्रोफेसर गैरेथ विलियम्स और उनके साथी मिमि चेन व मार्क डैली इन कुत्तों की जीवन रक्षक भूमिका से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने फैसला किया कि उनके नाम ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में छपने वाले शोध पत्र में लेखकों के रूप में शामिल किए जाएं। जर्नल ने भी इसे सही माना और उस शोध पत्र में लेखकों के रूप में नैट, सूज़ी व कैण्डी के नाम हैं। यह एक ऐसा बिरला शोधपत्र है जिसके लेखकों में इंसान के अलावा कोई अन्य जीव शामिल है। यह शोधपत्र चूंकि क्रिस्मस अंक में प्रकाशित हुआ था और उसमें कई अन्य हल्के-फुल्के आलेख भी थे, इसलिए कुछ पाठकों ने इसे एक व्यंग्य भी माना।

सवाल यह है कि क्या कुत्तों द्वारा चेतावनी दिए जाने के ये विवरण सत्य हैं? क्या इन्हें गंभीरता से लेकर इन पर आगे शोध करने की आवश्यकता है? या ये मात्र 'बुरा न मानो होली है' नुमा खबरें हैं? ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में छपी प्रतिक्रियाएं दोनों तरह की हैं।

पैरिस के सेंट लुई विश्वविद्यालय के डॉ. पोचार्ड, लेवी, एज़ूले और शेवरे ने इंग्लैण्ड से आई इन खबरों का मज़ाक बनाया। उनका मत है कि पूरा मामला गप्प है। दूसरी ओर वर्ल्ड स्माल एनिमल वेटरनरी एसोसिएशन के डॉ. रे मार्कस का कहना है कि उनके पास इस तरह की रिपोर्टें आती ही रहती हैं जिनमें जन्तु सम्प्रेषण के इस तरह के वर्णन होते हैं। उनका मत है कि इस क्षेत्र में अनुसंधान न करके हम

अपना ही नुकसान कर रहे हैं। ब्रिटेन की एक परमार्थ संस्था 'सपोर्ट डॉग्स' के वाल स्ट्रॉन्ग का कहना है कि मानव रोगों की पूर्व सूचना के लिए कुत्तों के इस्तेमाल में सावधानी बरतनी चाहिए। 'सपोर्ट डॉग्स' कुत्तों को प्रशिक्षण देता है ताकि वे विभिन्न किस्म के विकलांग लोगों की मदद कर सकें। उनकी संस्था ने हायपोग्लासेमिया की पहचान के लिए कुत्तों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है।

डॉ. स्ट्रॉन्ग और उनके साथी एस.डब्ल्यू. ब्राउन व डॉ. आर.वाकर ने 'सीज़र' नामक शोध पत्रिका में 1999 में एक शोध पत्र प्रकाशित किया था जिसमें उन्होंने सीज़र के प्रति चौकन्ने कुत्तों के प्रशिक्षण का ब्यौरा दिया था। ये कुत्ते सीज़र से 15-45 मिनट पहले अपने मालिक को इसकी सूचना दे देते थे। प्रत्येक कुत्ते का पूर्व चेतावनी समय निश्चित था और यह देखा गया कि इसकी वजह से मालिकों में सीज़र की आवृत्ति कम हुई। परन्तु डॉ. स्ट्रॉन्ग का मत है कि कुत्तों के इस तरह के इस्तेमाल में सावधानी की ज़रूरत है क्योंकि विशेष प्रशिक्षण के अभाव में ये कुत्ते काफी गलत हो सकते हैं और कभी-कभी अपने मालिक के प्रति आक्रामक भी हो जाते हैं। उनका सुझाव है कि कुत्तों का चयन बहुत ध्यान से किया जाना चाहिए और बहुत विशिष्ट प्रशिक्षण होना चाहिए। यह काम मुश्किल नहीं है - इसमें लगभग 6 महीने का समय लगता है। इस तरह से कुत्तों को दृष्टिहीन व्यक्तियों या पहाड़ में खो गए व्यक्तियों की मदद के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है।

सवाल यह है कि ये कुत्ते अपने मालिक पर आसन्न संकट का पूर्वाभास कैसे कर लेते हैं? सबसे सीधा उत्तर तो यह लगता है कि कुत्तों की सूंघने की शक्ति का इसमें हाथ होगा। कुत्तों की इसी क्षमता का उपयोग नशीली दवाइयों व गोला बारूद को खोजने या अपराधियों का पीछा करने में किया जाता है। परन्तु लगता है कि बात मात्र इतनी ही नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुत्ते मांसपेशियों के कम्पन और व्यवहारगत बदलावों को भी भांप लेते हैं।

तनाव से मुक्ति

कुत्तों को थपथपाकर व्यक्ति को सुकून मिलता है। डॉ. विवियन एडवर्ड्स के कुत्ते किम ने पीड़ित महिला को छूकर

व उसकी आंखों में देखकर उसे तनाव मुक्त किया था। चिकित्सा साहित्य में इस बात की रिपोर्ट्स मिलती हैं कि कुत्ते से बात करके, उसे थपथपाकर रक्त चाप कम होता है। इससे दिल के दौरे की आशंका भी कम होती है। लगभग 12 वर्ष पहले साउथ कैरोलिना विश्वविद्यालय के डॉ. वर्मब्रुक और डॉ. ग्रॉसबर्ग ने 60 स्त्री-पुरुषों पर इस 'कुत्ता प्रभाव' का अध्ययन किया था। उनसे कहा गया कि वे एक कुत्ते को देखें, थपथपाएं और उससे बातें करें। इस दौरान उनका रक्तचाप और हृदय की धड़कन नोट की गई। कुत्ते को थपथपाते समय रक्तचाप सबसे कम रहा, कुत्ते से बातें करते समय उससे थोड़ा अधिक रहा जबकि सबसे ज़्यादा रक्तचाप शोधकर्ता से बात करते समय रिकॉर्ड किया गया। यही हाल हृदय की धड़कन का भी रहा। कुत्ते से बात करते या उसे छूते समय धड़कन की गति धीमी रही मगर बात व छूना दोनों एक साथ करने पर गति तेज़ रही। कुत्ते को छूना शायद सबसे अधिक असर दिखाता है।

क्या यह क्षमता सिर्फ कुत्तों में है या अन्य जानवर भी ऐसा प्रभाव रखते हैं? ऐसी घटनाएं रिकॉर्ड में हैं जब पेराप्लेजिक या अन्य इसी तरह के विकलांग बच्चों को डॉल्फिन के साथ पानी में तैरने दिया गया और उनकी हाथ-